

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुकें.

—ः हस्ति निधि संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक पृष्ठ ३३२ (३३३)

ग्रंथ नाम सुनु नागहिवर.

विषय मराठी काव्य.



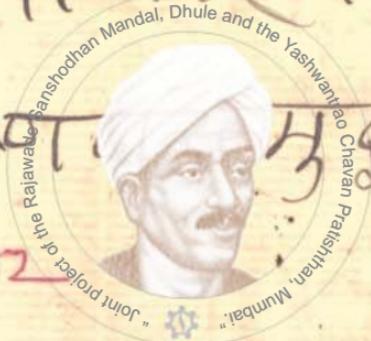
३.८.२
मराठी

मोहो

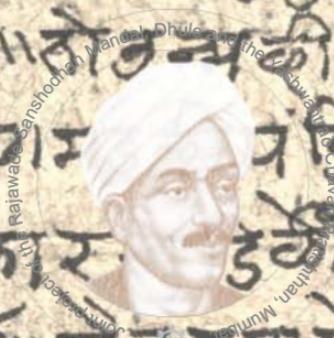
सुन्दराचार्यांगांडिवर

कृष्ण अशोक

१९६१ दि २५



"सुक्षेपनागहावरत्रारभः।
क्रीगवेशायेन्माः श्रीनामचेशयेन्माः॥
ज्ञोव्यातं काच्चाओतंकसुरुः कमला च
जनकारिसुरुः होत्रयकीलोजीघनेनि
जीवीदुःखयाऽप्तियेवाः॥१॥ का
माकुशाकलारु दुर्भाः॥ तेसेवगत्रा
गद्धेदुनीनेक्षोद्गरणमेदनीवरीठेक्ष
मकराक्षद्विजेवाः॥२॥ वरीच्छाचरिदर
शेतनयेनः कुठिकीवीकुक्षेष्ठवीशा



Rajawade Ganeshodien Mandir, Dhule and the Vashwani Ghat Chavara Library, Mumbai

शः॥३३॥ विजेते श्रीकृष्णां॥ यं
सीरीकला दावजीः॥४॥ सोमवार्षान्
क विश्वाद्यो ग्रीष्मावानि औ छीतग
द्वा॥ पुखावलि कालाद्वा॥ दु
रवर्गलय दुवा॥ पावक सिखा
पैतावंटाः॥ ते शारिक दुभिश्वापिगंटां
शोखवर्जीआतीतिरवदाः दृतदाढ़ां वि
कांक्वा॥५॥ माथावाडुनकीज्वा बरसाही



Joint Project of
Rajawali Sanskriti
and Kashwantrao
Savarkar Marg
Mumbai

तरुशोमध्यरानीवा ममुस्तिः ऊरुगुडी
यस्मीसूगलेटी॥ जेक्केक्केटी श्रीमासाङ्॥७॥

मागवर्दीक्काकायेवुक्काँचुद्धीसुमीत्रे
तोडिक्काहस्तुं॥ क्करिपडत्तपड
दुं॥ प्राधन्यायेत्तुक्काः॥ वर्गव
क्क्योनीयागगजाः॥ आक्कामीकुच्च
क्केमुवना॥ सुक्कोन्नेन्नीयाज्ञाग
णाङ्॥ भाजीपंडकादुवर्तमाण॥८॥

३

(3)

२

तेज्जु अवान्नी या सुजाः जे सुं शृं राग
क्षेसना जाः नौन्माशी टो कुन्की नीज पा
जाः नाक्ष स गण सा श्री एः ॥७॥ तिन्की या
रुपा खी दे खु जिर् दी पछी चेदं एमा
धुवी ॥ दे दो गं ना न ई वीः ॥ पुवी चके
की या ना क्ष सी डाचा हात क्रतु ज्ञेका ठोन
नी मा पं ॥ करु जन्ये नी क्षा गो नी रु पं
तेस नी ज्ञाही वाव ष्ये दर्पि ॥ इति पा तु नी
पाक टोः ॥ १७१ ॥

3A)

जती शाबं रिचोप्सार्या ॥ उणी होगणी के क्षी
याः तेथद मयेति नैरोधजायाः उणीया
व्यापाडकीयस्मि ॥ १३ ॥ यापरीते मृगान
ना ॥ सुवोचना ॥ वाचनाः व्याजी
व्याप्रकाक्षीयः ॥ दोपदेतीसोदर्यै ॥ १४ ॥
है समन्वकीनीजमहीरिष्ठउपवीस्तं
कुसुमाच्चेव्याख्यावारी ॥ दावोहुकरीती
वीधाधरीः ॥ आहो जात्रीकावकीका ॥ १५ ॥

सकल सतोह कोकी ॥ न जर्वी कीर
जक ब्राह्मी तव प्रंशु पूर्णी संवेतनी
पठोकी ॥ आता रम सज्जागणी ॥ १४ ॥
सोह पाकनी ॥ नी ॥ पंडकानाम
गन्जीया आव दाहाजप्ती ॥ २१ ॥ गणपातकीया
पाहाती पाखुनी बधमभी के ॥ उम
टकीया नुधाखी ठीबु के ॥ कक्षे पासु



Portrait of Guru Nanak Dev Ji, the founder of Sikhism.

नीदोद्दितदेखेः॥काव्यदडासारीखाः॥१७॥
दास्ति सुपारी डीस्थामीणी॥परमणा
श्रीयपाहानमेनी॥नेणोकंवणाच
ब्यागंणी॥वीर पट्टीकाव्यासे॥१८॥
बाट्टस्थगीजाला उड़े॥सात्त्वास्ति
मार्गउत्तरका॥१९॥कीआमीशेनेतां
आरणानुला॥गब्बोनीपट्टीकायेस्था
नी॥२०॥चोलसागतीनीज्जवातीका॥



Bijawade Shodhan Mandal Phuse and the Kasthwantrao Chavhan Research Foundation Mumbai, India

(5)

परीसोनीकाद्वयेकुक्त्या। वीकं॥ आधी
 मुग्कीरत्प्रदुका॥ व्यातीजानावीझ
 उकरी॥ ३॥ देवत्वं देवावतीमान
 मा॥ वोहुपुड़ि॥ रखप्रकाश॥ र
 क्तांरावणुनाय॥ दुरामासावरीत
 यावीवी॥ ५॥ तोबुक्तेठाकीक्तेवहनीते॥
 याजन्नठक्तेयोकाते॥ वायुचुबीत
 खेदोदकाते॥ मोहुरवीदुंबारक्ते॥ २२॥



Rajawadi Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Project
 with the support of the Government of Maharashtra

(5A)

तुखेसखियासी हुणसद्गदं॥ नाम्रावण
दारुणाद्वदं॥ क्लागवेया सहनीये युद्धे॥
जनकासुखकारं २॥ कुम्भकर्णसिनी-
शाखर॥ तरणीयाटं आपारेः॥ याहुधनं
दि चेतुं बद्धपुरे॥ ३॥ तुलेक्लोटक्ले॥ ४॥ या
चासुठघयावया पाहुचाः॥ युध्या गेवाजामु
चान्नाहों॥ कायेकरिचेकैक्लासंवावो॥ तेतवं नी



"Joint portrait of the Ratalwade Sapochhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Pahlala in memory of their joint services to the Maratha cause."

(6) कृत न येण वे ॥ २४ ॥ ये ज्ञवो छ दण्डा से कृपां सुदं रा ।
स वे गं पा त विम दि र द्वारा ॥ त वं ना गं जी काँ काँ
त सा भो रा ॥ कृष्ण दं कुट चिका ॥ २५ ॥ ये सोनी स्थं
ह स्थं पंती ह स्थं प हे ॥ हे व वं पंजी धाठी की
बा ह ॥ ये कका मान र बो माये ॥ वे कुटी ला फ
पं तु निया ॥ २६ ॥ यो दृखा का ई झजी तां जा ह स्थं
न व दृक्षु द्विकां स दितुं ॥ विविर कं कं ची
की ती भु खं जु जे दृडि ॥ २७ ॥ प्या जिजगचों

२ लांहाका माते: हुणउनीवहै न पिटी हुए ॥
ज्ञावतिनायेकां जीशोतः ॥ ३ खंहुण माडिव
जंडसमिर कुरु ॥ न ठन्मक्षोनीषंड
मेदनी ॥ तैसीखार ॥ आग धी ॥ सुबोत्तें
नमुछी तु पंडीय ॥ ४ उडतीखाकोदो
निहटी ॥ न येनीहोतसे उदं क ब्रीहीः ॥ सुठ
ल्लीजो कलीधिर हुंटी ॥ झीतीवरिक्षोक्ता ॥ ५



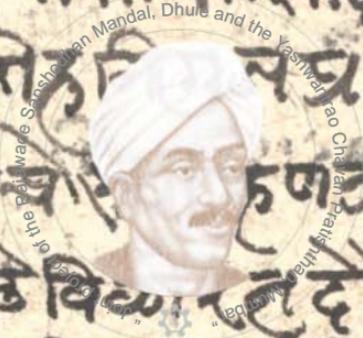
"Joint Project of
Rajiv Gandhi Sanskrithik Mandal, Dhule and the
Vachavantao Chavhan Pratishthan,
Mumbai."

तेवेषीवैशीधीच्छाणां॥ तिहीसावंरकीसु
व्येषेनाः॥ मृणांतीरंतरोकसाइनिमनाः॥
कुठेसुचनाविद्या॥ पविवेकम्भवोद्यां
कारतरि॥ शातंनन्निकहर्वान्नरि॥ परि
साशोकांणिबाच्याकहरा॥ नावरतीविचा
नाः॥ उचलुनिप्राणेस्ववाजिभुजां॥ मृणे
प्रायेमुक्त्याचीसेमजा॥ तरीमौन्येचीच्यां



Portrait of Yashwantrao Chavhan, a Maratha general, wearing a turban and a mustache, looking slightly to the right.

पुक्केगुज्जा॥ सर्वैसागेंमज्जप्रति॥ अग्नीमीहोई
जे पंतिब्रतां मनोभावे॥ साक्षेया सीजेक्षेस
दासीवे॥ रारिलीकुर्ति नघगढावे॥ याचे
तन्हुण्हुहुर्दृश॥ फणउनिहाटकरसे
भरेती॥ कुछडेविळा रहेदोतीः॥ अंतुंसु
खिवापिछीहाती॥ व्यापर्णीपंतीसमंरोनी॥
केरवणि वेसुं निबोटी॥ झुज्जेपंत्रंपसरीवे



मुं तदिः॥ नीजीवी न स्ते वीही क्ले श्रुं स्ती॥

(8) माठं या मुं तव री क्ले॥॥ स वे श्री शु
लस जि व जाए द्वा क्षेर साधी केंद्र
त्रीकां वीही क्ली॥ ८ भाज शु प्रिव री पं
डि की॥ को दुं कमाता सर कक्की को ॥ ९ टा॥

पं त्रव दुं नि सु वो ज्वे ना॥ वा ची लां या श्रु वो
ट क्ले न ये ना॥ स खोया साडू नी बहु वन्द



Portrait of Prof. Dr. Jayadev Chavhan, M.P., Ph.D.
Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Peeth, Maharashtra, India.

(8A)

नाम्योकोठेल्यानिवारा॥१७॥ मदारकटी
 रदंकुमारी॥ वस्त्रनयोकेंवोत्रागेस्त्रिरि॥
 मासीयादेहभारत्यावस्यरिहोतिसेहुरि
 प्रस्त्रीये॥१८॥ व्यत्तुद्वदाजावदु॥
 नायावधणवीज्ञे॥ ॥ हावयावागिजात
 देहु॥ प्रसनकरितानुव्येन्नरवे॥१९॥ रवंफल
 प्राप्तीचेयावस्त्ररी॥ दंदीचेवसाधीक्षिपु
 रि॥ घावाघावोनिवान्नारविरि॥ होम्या



Rajawadi Sahodaran Mahatma Phule and the Yashwant Rao
 Library Project
 Maharashtra, Mumbai

५

(१)

ज्ञावीष्यं सीवा ॥ कुछे द्वारुणं मुख्येज्ञाह ॥
 परितोनक्षेदेवेनपदिवे ॥ हृषीठनिम्ब
 मीत्रंसाद्यिवे ॥ तरपी त्रयेत्तिवदान् ॥ कु॥
 मीमांग्रामीत्राद् राम्पायात्रकसोमी
 त्रतोसत्पात्रावि ॥ नहातांदीष्यं सी
 रा ॥ सायोजेप्रासीकारणः ॥ रणमडवी
 उभारेद्वा ॥ नद्यनाथाचेठीलीगेवेसीरा
 दुजाकाग्निमुक्तुष्टादिवाकरायेसंत्रवाचीत्प्रसी



Photo of Rajendra Sandeepan Mandal, Dhule and the
 author of Mantra Chavan
 (unpublished)

१८) उन्नया चीसि सोरहा ॥ गुणवत्तना चे विशास्तंगां
न ॥ जीतां दीधकी मज्ज प्रमाण ॥ तोष्याठ वेष्य
स्त्रोंदे ॥ अधा भवां धृता परतीरि ॥ उपाति
स्तं तज्जन्मेवो सुदंर तदि धिका रहोने करि ॥
दुलवा ठीर द्या ॥ ४७ ॥ ह्लाण उलिखातं
सवेगेये ई ॥ बहुत व्योहीण न छ गका हिं ॥
ब्यसेप त्रवा चितां वाची तां मही ॥ तकी पड़
हरिणाही ॥ इन उजज्जवलो गो चिं सुदंरी ॥ कहं



Rajavade Bansthal Mandal, Dhule and the
Swami Vivekananda
University, Mumbai
Joint Project

१०) देनाक्षरि॥ माडिकीदीर्गस्वरी॥ तेपाथरारिकी
द्युरत्री॥ उधरकुंभारिमोहे॥ रथाहापोछद्वि
लोतांवीराश्रेष्ठा॥ रद्धारावीरामाजीव
कुकंटां॥ प्याडिया॥ तवेकुंटपिटां॥ ग.
मनकेकेमज्जवि॥ दुष्टीयोत्तमाहां
समुद्रु॥ द्यीयजीकीसीमुद्धरिद्रु॥ प्रतांपंतु
खंरीसहशकरिद्रु॥ नीमुरवद्योतगणाते॥



"Joint Project of Rajmachi Sevayog Samachan Mandal, Dhule and the Yadav Welfare Committee, Palghar, Mumbai".



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com